धीरज श्रीवास्तव

जन्मस्थान- चिताही,सिद्धार्थ नगर (उ.प्र.)
शिक्षा- स्नातक
प्रकाशन– मेरे गाँव की चिनमुनकी एवं धीरज श्रीवास्तव के गीत (डॉ.सुभाष चन्द्रा द्वारा संपादित) सहित अनेक साझा संग्रहों एवं वेब पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित।
संपादन- नेह के महावर (गीत संग्रह) एवं मीठी सी तल्ख़ियाँ (काव्य संग्रह)
सम्मान- विद्या वाचस्पति (श्री मौनतीर्थ हिन्दी विद्यापीठ उज्जैन) गीत शिरोमणि, साहित्य सेवा संस्थान अयोध्या सहित अनेक सम्मान एवं पुरस्कार।
संप्रति- संस्थापक सचिव, साहित्य प्रोत्साहन संस्थान एवं अध्यक्ष साहित्य रत्न।

कल्लू काका

चौराहे पर कल्लू काका।
दिन भर मारें गप्प सड़ाका।

घर में भूजी भाँग न बाकी
भूखा पेट बहुत हठधर्मी।
आलस पड़ा भरे खर्राटे
गर्दन तक ओढ़े बेशर्मी।
सैर स्वप्न में करें इरादे
लन्दन पेरिस दुबई ढाका।

चौराहे पर कल्लू काका।
दिन भर मारें गप्प सड़ाका।

उछल उछल लँगड़ी आशाएँ
दिखा रहीं फोकट में सर्कस।
बीड़ी,जर्दा,चिलम,चुनौटी
अद्धी,पौव्वा करें चकल्लस।
पंचायत की धूर्त सियासत
लगा रही बिंदास ठहाका।

चौराहे पर कल्लू काका।
दिन भर मारें गप्प सड़ाका।

नाकामी गढ़ रही बहाने
कुटिल कर्ज की भौंह तनी है।
ब्याज उसे कैसे दे मोहलत
रूठी जिससे आमदनी है।
खर्च डालता मूँछ ऐंठकर,
मिट्टी की गुल्लक पर डाका।

चौराहे पर कल्लू काका।
दिन भर मारें गप्प सड़ाका।

रिक्शे वाले

फटे पाँव हाथों में छाले।
मगर मस्त हैं रिक्शे वाले।

रोज थिरकतीं मदहोशी में,
साँझ ढले आशाएँ भोली।
स्वप्न अधूरे ठर्रा पीकर,
नमक चाट कर करें ठिठोली।
फुटपाथों पर नग्न गरीबी
पड़ी अगौंछा मुँह पर डाले।

सेंक रही है बैठ विवशता
ईंटों के चूल्हे पर रोटी।
प्यासा गला ढूँढता फिरता
सड़क किनारे नल की टोटी।
भूख निगलती प्याज तोड़कर
हरी मिर्च के साथ निवाले।

अक्सर करते जाम सड़क को,
रैली ,धरने बैनर झंडे।
खिसियाई खाकी बरसाती,
रिक्शे के कूल्हों पर डंडे।
भद्दी भद्दी गाली खाकर,
अपमानों के पीते प्याले।

ठंड गिराती आसमान से,
साथ ओस के भाई-चारा।
एक फटे कम्बल में करते,
राधे-जुम्मन साथ गुजारा।
भिड़ें अजानें शंखों के सँग ,
या मस्ज़िद से लड़ें शिवाले।

ISSN:2583-8849